मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MVS–012

वास्तुशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(पी. जी. डी. वी. एस.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2024
एम.वी.एस.-012 : गृहपिण्ड विचार एवं गृहारम्भ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र* **दो** *खण्डों में है। सभी खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड–क

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।* 3×20=60

1. भूमि परीक्षण एवं चयन के सन्दर्भ में ग्रामवास के शुभ एवं अशुभ फलों का वर्णन कीजिए।

2. प्रशस्त भूमि क्या है ? इसके लक्षणों का वर्णन कीजिए।

3. वर्ण, रस, गन्ध के द्वारा भूमि के शुभ और अशुभ पक्षों का वर्णन कीजिए।

4. भूमि परीक्षण में निषिद्ध भूमि के निर्णय किस प्रकार किये जाते हैं ? विस्तृत वर्णन कीजिए।

5. भूमि के आकार-प्रकार निर्धारण की विधि का वर्णन कीजिए।

6. भूमि शोधन या गृहपिण्ड विचार में पंचांग परिज्ञान क्यों आवश्यक है ? विस्तार से वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान ह।* $4 \times 10 = 40$

1. भूमि शुद्धि की विधियों का वर्णन कीजिए।

2. भूमि का परीक्षण करने की विधि क्या है ? वर्णन कीजिए।

3. पिण्ड साधन के अवयवों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

4. पिण्ड-निर्धारण में वास्तुशास्त्र के नियमों का किस प्रकार पालन किया जाता है ? उल्लेख कीजिए।

5. अहिबलचक्र का वर्णन कीजिए तथा पिण्ड निर्धारण में इसकी उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

6. गृहारम्भ विधि का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

7. चक्रशुद्धि क्या है ? गृहारम्भ में इसकी उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

8. गृहारम्भ मुहूत्त का संक्षेप में वर्णन कीजिए।